ॐ

~~~~~~~~~~~

विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कक्षा -नवम् विषय- हिंदी

दिनांक- 20/05/202 क्षितिज- काव्य -खंड

°°°

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

सुप्रभात बच्चों, आपका जीवन आनंद से भरा हो!

प्रत्येक दिन की भाँति, आज पुन: आपके समक्ष पाठ्य सामग्री की कड़ी को जोड़कर प्रस्तुत हूँ । लेकिन पठन-पठन को जारी करने से पूर्व कल का एक अधूरा प्रश्न है, जिसे आज मैं बता रही हूँ ।कल मैंने अष्ट सिद्धि एवं नव निधियों के विषय में चर्चा किया था । विभिन्न प्रकार की सिद्धियों एवं निधियों को जानने से पहले यह

जानना अति आवश्यक है कि सिद्धियाँ क्या होती हैं? सिद्धि शब्द का तात्पर्य सामान्यत: ऐसी पारलौकिक और आत्मिक शक्तियों से है, जो तप और साधना के द्वारा प्राप्त होती है अर्थात जब व्यक्ति अथक तपस्या और साधना करता है तब उसे यह सिद्धियां और निधियां प्राप्त होती हैं। सिद्धियां आठ प्रकार की होती हैं इसलिए इसे अष्ट सिद्धियों के नाम से जानते हैं एवं निधियां नौ प्रकार की होती है इसलिए इसे नव निधियों के नाम से ८जानते हैं।

अष्ट सिद्धियां

1.अणिमा 2. महिमा 3.लघिमा 4. गरिमा 5. प्राप्ति 6.प्राकाम्य 7. इशित्व 8. वशित्व

नौ निधियां

1. पद्म 2.महापद्म 3. नील 4. मुकुंद 5. नंद 6. मकर 7. कच्छप 8. शंख 9.रुर्व

साधारण रूप से अष्ट सिद्धियों और नव निधियों को हम इस रूप में जानते हैं कि इनके विभिन्न चरणों में, मनुष्य विभिन्न शक्तियां प्राप्त करता है जिसके बल पर वह अपनी इच्छा अनुसार अपने -आपको वश में करता है और अपनी इच्छा अनुसार जो चाहता है वह कार्य पूर्ण करता है। धनधान्य से भरा -पूरा भी रहता है। विशेष इसके बारे में जानकारी न देते हुए, अब हम लोग अपने पाठ्य सामग्री पर आते हैं। हम लोग रसखान के सवैया को पढ़ रहे थे। सवैया में आज तीसरा पद पढेंगे तीसरा पद इस प्रकार है –

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं,गुंज की माल गरें पहिरौंगी ।

ओढि पितम्बर लै लकुटी बन गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी।।

भावतो वोहि मरो रस्खानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

प्रसंग-

प्रस्तुत सवैया में कवि रसखान ने कृष्ण के प्रति गोपियों के अतिशय प्रेम का वर्णन करते हुए कहा कि गोपियां उनकी बांसुरी को अपनी सौत मानती हैं।यहां पर गोपियों के द्वारा कृष्ण को दी जाने वाली उलाहना के बारे में भी वर्णन है ।

व्याख्या- कवि रसखान गोपियों के माध्यम से कहते हैं कि गोपियां कह रही है, सखी मैं श्री कृष्ण का रूप बना लूंगी, मैं उनकी तरह अपने सिर पर मोर पंख धारण कर लूंगी वैजंती माला गले में धारण करूंगी तथा पीतांबर वस्त्र भी धारण करूंगी, लकुटी भी लूंगी और ग्वालों के संग वन में भी विचरण करूंगी ।वह आगे कहतीं है , उसे माधव बहुत प्यारे

हैं ।कृष्ण बहुत प्यारे लगते हैं और उनके कहने पर वह कृष्ण के स्वरूप को अपने ऊपर धारण कर लेंगी और कृष्ण बनने का करेंगी। अर्थात् कृष्ण बनने का नाटक करेंगी ।इसके साथ वह सखी के सामने एक शर्त भी रखती हैं वह यह सब कर सकने के बावजूद कृष्ण के अधरों पर यानी कि कृष्ण के होठों पर जो मुरली विराज रही है ,कृष्ण के होठों पर जो वंशी शोभायमान होती है उसको कभी अपने होठों से नहीं लगा सकती। यहां पर गोपियां कृष्ण की बांसुरी को अपना सौत मानती हैं और इसलिए वे सारे स्वांग रचने के लिए तैयार है कृष्ण के स्वरूप को अपने ऊपर डालने के लिए तैयार है सब कुछ वह कृष्ण के जैसा ही करेंगी परंतु कृष्ण की बांसुरी, जो कृष्ण के होठों पर बहुत ही शोभा देती है, उन बांसुरी को ये गोपियां अपने होठों तक नहीं लाएंगी।गोपियों को बाँसुरी से इर्ष्या हो रही है। यहां

पर रसखान ने गोपियों के बांसुरी के प्रति सौतिया डाह को दर्शाया है। उनकी ईर्ष्या को दर्शाया है । कृष्ण के प्रेम को तो वह चाहती हैं परंतु कृष्ण की बांसुरी से उन्हें बहुत ही इर्ष्या है क्योंकि कृष्ण कभी भी अपनी बांसुरी को नहीं छोड़ते हैं ।हमेशा अपने साथ रखते हैं इसलिए गोपियों को कृष्ण के बांसुरी से ईर्ष्या हो रही है।

विशिष्ट अर्थ

- **प्रस्तुत काव्य में ब्रजभाषा की सुंदर कोमल योजना है।**
- **गोपियों का हठ भाव अति आकर्षक है भक्ति रस की सुंदर छटा है।**
- **भाषा सरस एवं प्रवाहमयी है।**

- मुरली मुरलीधर तथा अधरन अधरान मैं यमक अलंकार एवं अनुप्रास अलंकार की काव्य सौंदर्यता की है।

कठिन शब्दार्थ-

भावतो - अच्छा लगना

अधरन-होठों पर

अधरान-होठों पर नहीं

मुरली-बाँसुरी

मुरलीधर-श्री कृष्ण

छात्र कार्य-

दिए गए पद को एवं उसके भावार्थ को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए एवं याद करें

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"